" मध्ययुगीन मराठी संत कवि सावता माळी के चयनित अभंगों का हिंदी अनुवाद और निर्वचन आधारित अध्ययन "

(Study based interpretation and Hindi translation of selected Abhangs of Medieval Marathi Sant poet Savata Mali)

अनुवाद अध्ययन विभाग में एम.फिल.

उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु शोध-प्रबंध

सत्र: 2015-16

शोध-निर्देशिका
डॉ. हरप्रीत कौर
सहायक प्रोफेसर
अनुवाद अध्ययन विभाग

शोधार्थी
माळी प्रिया
नामांकन संख्या: 2015/04/219/003
अनुवाद अध्ययन विभाग

अनुवाद अध्ययन विभाग
अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीयहिंदी विश्वविद्यालय
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
गांधी हिल्स, वर्धा- 442001 (महाराष्ट्र), भारत
वेबसाइट: www.hindivishwa.org

विषयानुक्रमणिका

आभार

भूमिका **01-03**

प्रथम अध्याय – संत काव्य परंपरा का संक्षिप्त परिचय **04-12**

1.1 मध्ययुगीन भारतीय संत काव्य परंपरा का परिचय
1.2 मराठी संत काव्य परंपरा का परिचय

द्वितीय अध्याय : सावता माली का संक्षिप्त परिचय **13-14**

2.1 मध्ययुगीन मराठी संत कवि सावता माळी का संक्षिप्त परिचय

तृतीय अध्याय : सावता माली के चुनिन्दा अभंगों अनुवाद का निर्वचन आधारित अ. 15-47

भूमिका

3.1 सावता माली के चुनिंदा अभगों का हिन्दी अनुवाद

3.2 सावता माली के चुनिंदा अभंगों का निर्वचन आधारित अध्ययन

3.2.1 निर्वचन का अर्थ,परिभाषा और प्रकार

3.2.2 सावता माली के चुनिदा अभंगों का निर्वचन आधारित अधययन

निष्कर्ष

उपसंहार एंव निष्कर्ष 48-59

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

परिशिष्ट

1. अभंगों में आए प्रमुख शब्द
2. सावता माली के जीवन से संबंधित कुछ चित्र
3. साक्षात्कार :सावता माली के ग्रामवासियों से हुई बातचीत
4. सावता माली की वंश परंपरा

भूमिका

प्रस्तुत शोध के अंतर्गत हमने मध्ययुगीन मराठी संत कवि सावता माळी के चयनित अभंगों का हिंदी अनुवाद और निर्वचन आधारित अध्ययन किया है जिसमें हमने निर्वचन की टीका और व्याख्या पद्धति का सहारा लिया है। मध्यकालीन संत काव्य का अनुवाद उसकी गीतात्मकता के कारण कठिन है फिर भी इस शोध के अंतर्गत हमने सावता माळीके अभंगों का अनुवाद और निर्वचन आधारित अध्ययन करने का प्रयास किया है। संत शब्द 'सन् + त' इन दो शब्दों के मिलने से बना है। संत का मतलब है विद्या, नम्रता, शुद्ध आचरण, व्यापक दर्शन, उन्नत विचार, उदार दृष्टि, आंतरिक आत्मीयता, श्रेष्ठ साहित्यगुण और अभंग पठन, भजन, कीर्तन आदि के माध्यम से लोगों के आचार को, विचारों को प्रभावित करके समाज में परिवर्तन लाने वाला व्यक्ति। संतों ने 'सर्व धर्म समभाव' इस तत्त्व को अपनाया। मानव कल्याण, ईश्वर चिंतन और भक्ति प्रचारक को भी संत कहा गया है। मध्यकालीन मराठी संतों का तत्कालिक सामाजिक परिवर्तन में बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इनमें प्रमुख रूप से निवृत्तिनाथ, ज्ञानदेव, सोपान, मुक्तबाई, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम आदि के अभंग और इन अभंगों में उल्लेखित सभी संत और उनके अभंगों को प्रमाणित रूप में कीर्तनों में शामिल किया जाता है। इनमेंचांगदेव, सेना न्हावी, नरहरी सोनार, सावता माळी, चोखामेळा, जनाबाई, कान्होपात्रा आदि मराठी संत और साथ ही हिंदी भाषी संत जिनमें प्रमुख रूप से कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई भी शामिल है। कबीर तो जनप्रिय अक्खड़ स्वभाव संत रहे हैं।

मराठी संत परंपरा में वारकारी संप्रदाय एक विस्तृत संप्रदाय है। वारकरी का मतलब है आराध्यदेव विठ्ठल की भक्ति और पंढरपुर की नियमित तीर्थयात्रा 'वारी' करनेवाला। भागवत एवं वैष्णव इसी के पर्यायवाची नाम है। लेकिन इस संप्रदाय के कुछ संतों ने अपने कर्म को ही ईश्वर मानकर काम करते करते ईश्वर चिंतन किया। मराठी संतों ने ओवी, अभंग, भारुड़, हरिपाठ, भजन, श्लोक आदि अलग अलग प्रकार के उल्लेखनीय वृत्तों की रचना की है। उपरोक्त सभी संतों ने लगभग मुख्य रूप से अभंगों की रचना की है। पूरे भारतवर्ष के सभी जाति-धर्म के लोगों को एक साथ जोड़ने में संत, अभंग और 'वारी' इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अभंग का मतलब है खंडित न होनेवाला पद। अभंगों में सावता माळी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सावता माळी ने 'कर्म ही ईश्वर है' का संदेश देते हुए भक्ति साधना की है। यह एक किसान थे। इनके अभंगों में तत्कालिक कृषि से संबंधित शब्दावली का प्रयोग हुआ है। सावता माळी के अभंगों को मंदिरों, गावों के धार्मिक जलसों में गाया जाता है। खेती में काम करते-करते किसान भी सावता माळी के अभंग गाते है। जिनमें गाते गाते कुछ भाषाई परिवर्तन आ गए हैं। प्रस्तुत शोध के माध्यम से मराठी संत कवि, वारकरी पंथ, उनकी संस्कृति, उनका कार्य क्षेत्र, उनके अभंगों का हिंदी अनुवाद और निर्वचन आधारित अध्ययन किया जाएगा। इस शोध के माध्यम से यह तथ्य सामने आएगा कि मध्ययुगीन मराठी संत काव्य के अभंग कैसे हैं और अनुवाद के माध्यम से उनका विकास कैसे किया जा सकता है। मध्ययुगीन संत काव्य का समय समय पर निर्वचन होता रहा है। कबीर के काव्य की नई-नई व्याख्याएँ इसी का एक उदाहरण है। कबीर की उलटबासियों साखियों का अलग-अलग व्याख्याकारों ने अपने अपने ढंग से निर्वचन किया है।

ऐसे में हम इस शोध के माध्यम से संत कवि सावता माळी के अभंगों का निर्वचन आधारित अध्ययन करेंगे। जिसमें अभंगों की व्याख्या करते हुए उसे समकालीन संदर्भो से जोड़ते हुए उस समय के समाज की

स्थितियों, परिस्थियों का आकलन करते हुए निर्वचन आधारित अध्ययन किया जाएगा। सावता माळी अपने एक अभंग में लिखते हैं -

"प्रपंचीं असूनि परमार्थ साधावा। वाचे आठवावा पांडुरंग
उंच नीच कांही न पाहे सर्वथा। पुराणींच्या कथा पुराणींच।।
घटका आणि पळ साधीं उतावीळ। वाडगा तो काळ जाऊं नेदी।
सावता म्हणे कांते जपें नामावळी। हृदयकमळीं पांडुरंग।"[1]

ईश्वर की साधना के लिए सिर्फ नाम स्मरण ही पर्याप्त होता है। ईश्वर ऊँच-नीच की भावना नहीं रखता उसके लिए सभी जाति-धर्म के लोग एक समान होते हैं। धर्म के संबंध में जो पुराणों में कहा गया है उन्हें पुरानों में ही रहने दिया जाए। ईश्वर पुराणों के नियानुसार नहीं चलता है। समय और संकट हमारी परिक्षा लेने की जल्दी में हमेशा रहता है वह कभी भी हमारे सामने आ सकता है उस संकट को पार करने के लिए इश्वर चिंतन जरूरी है। जैसे कबीर बाह्य पाखंडों का विरोध करते हुए निर्गुण की आराधना का महत्व प्रस्तुत करते हैं वैसे ही सावता माळी ने भी अपने कई अभंगों के माध्यम से इस तथ्य को स्पष्ट किया है। इस तरह से हम इस शोध में सावता माळी के अभंगों का निर्वचन आधारित अध्ययन करेंगे।

प्रस्तुत शोध का क्षेत्र सावता माळी के अभंग और अनुवाद अनुशासन के अंतर्गत अनुवाद और निर्वचन आधारित अध्ययन तक विस्तृत है। सावता माळी अपने अभंगों के माध्यम से जिन विषयों अथवा जिन भौगोलिक क्षेत्रों तक अपने लेखन का विस्तार करते हैं वे सब मिलकर इस शोध के क्षेत्र का निर्धारण करते हैं।

प्रस्तुत शोध विषय के अंतर्गत मध्ययुगीन मराठी संत कवि और उनके अभंग एवं अभंगों से संबंधित पाठों का अध्ययन और निर्वचन किया गया है , मध्ययुगीन मराठी संत अलग अलग जाति-धर्म से है। सावता माळी ने अपने अभंगों में अन्य संत कवियों का भी जिक्र किया है उन कवियों की रचनाओं के बारे में यथोचित टिप्पणियाँ भी इसके क्षेत्र में शामिल हैं। सावता माळी के अभंगों का भौगोलिक क्षेत्र पश्चिम महाराष्ट्र ,मराठवाडा है वैसे संत काव्य परंपरा ने भौगोलिक सीमाओं को तोड़ते हुए समस्त मानवजाति के कल्याण के लिए ही रचनाएँ लिखी है। ऐसे में हम उन्हें किसी भौगोलिक क्षेत्र में नहीं बांध सकते। विषय क्षेत्र विस्तृत है।

प्रस्तुत शोध कार्य के अंतर्गत निम्न बिंदुओं का अध्ययन में शामिल किया गया है।

1- मध्ययुगीन मराठी संत कवि सावता माळी के अभंगों का संकलन।
2- इनके अभंगों का हिंदी अनुवाद।
3- सावता माळी के अभंगों का निर्वचन आधारित अध्ययन।

इस प्रकार हम इस शोध के अंतर्गत व्याख्या और निर्वचन प्रविधी का सहारा लेते हुए सावता माळी के अभंगों का निर्वचन आधारित अध्ययन करेंगे।

---

[1] अनिल दीक्षित, संत सावता माळी महाराज(अभंग, निरूपण आणि चरित्र), अभंग-14 वा, पृ-25

अभंग का अर्थ है जिसे खंडित या भंग ना किया जा सके। यदि इसे काव्य विधा के रूप में देखा जाए तो इसमें दोहा अथवा चोपाई जैसी शाली दिखाई देती है। एक अभंग अपने आप में एक पूरी कविता है। अभंग में एक ख्याल,एक काफ़िया एक रदीफ़ होता है।जैसे कि गजल के शेयर में होता है। अभंग दो पंक्तियों में लिखा होता है। एक पंक्ति में दो बार विराम आता है। दूसरी पंक्ति के आख़िरी विराम में अभंग पूरा हो जाता है। अभंग का एक अपना छंद विधान है अपना व्याकरण है। जिसके तहत इसमें ख़ास तरह का काव्य तत्व पैदा होता है जो सुनने या पढने वाले को संगीतात्मक आनंद देती है। साथ ही हर अभंग एक ख़ास तरह का विचार भी प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत शोध में हमने सवता माळी के अभंगों का अनुवाद और विस्तृत व्याख्या करते हुए उनका निर्वचन प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत शोध के अंर्गत कुल तीन अध्याय लिए गए हैं जिसमें प्रथम अध्याय – संत काव्य परंपरा का संक्षिप्त परिचय को लिया गया है जिसे हमने दो उपअध्यायों में बांटा है पहले उपअध्याय में हमने मध्ययुगीन भारतीय संत काव्य परंपरा का उल्लेख करतेहुए पूरे भारत के प्रमुख संतों के काव्य व विचारों का परिचय दिया है दूसरे उपअध्याय में हमने मराठी संत काव्य परंपरा का परिचय उल्लेखित किया है जिसमें हमने सावता माळी संत नामदेव , तुकाराम, ज्ञानेश्वर आदि का सामान्य परिचय देते हुए उनकी काव्य विशेषताओं का उल्लेख किया है।

द्वितीय अध्याय में हमने मध्ययुगीन मराठी संत कवि सावता माळी का संक्षिप्त परिचय शामिल किया है हमारा शोध मूलत: सावता माले से संबंधित है सावता माळीके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त नहीं हुई इसलिए इस अध्याय को प्राप्त सामग्री के अनुसार संक्षिप्त कर दिया गया है।

तीसरे अध्याय में हमने सावता माळी के चुनिंदा अभंगों अनुवाद का निर्वचन आधारित अध्ययन प्रस्तुत किया है जिसे हमने दो उपअध्यायों में बांटा है सबसे पहले इस अध्याय हेतु भूमिका में अभंगों का सामान्य परिचय दिया गया है फिर अभंगों की व्याख्या और अनुवाद किया गया है उसके पश्चात दुसरे उप अध्याय में हमने अभंगों का निर्वचन आधारित अध्ययन प्रस्तुत किया है। यह इस शोध का मुख्य अध्याय है।

अंत में हमने शोध का उपसंहार और निष्कर्ष लिखा है जिसमें शोध के मूल प्रश्नों के आधार पर उपलब्धियों की चर्चा की गई है। अंत में परिशिष्ट के तहत अभंगों में आए प्रमुख शब्द,ग्रामवासियों के साक्षात्कार और उनके जीवन से संबंधित कुछ चित्र शामिल किये गए हैं और साथ ही सन्दर्भ ग्रन्थ सूची को शामिल किया है।